SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महिला कमांडो (गुलाबी गैंग) की संस्थापक पद्मश्री शमसाद बेगम का वैयक्तिक अध्ययन

हेमलता बोरकर वासनिक, Ph.D., **मनीषा यदु,** शोधार्थी, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
हेमलता बोरकर वासनिक, Ph.D.
मनीषा यदु, शोधार्थी
E-mail : hemlataborkar@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/01/2025
Revised on : 12/03/2025
Accepted on : 21/03/2025
Overall Similarity : 01% on 13/03/2025

शोध सार

प्रस्तुत वैयक्तिक अध्ययन प्राथमिक तथ्य पर आधारित है। प्रस्तुत वैयक्तिक अध्ययन में पद्मश्री शमसाद बेगम के महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनकी भूमिका पर केंद्रित है। इस शोध आलेख में उनके द्वारा किये गए सामाजिक कुरुतियों के विरुद्ध कार्य को बतलाने का प्रयास किया गया है। मुस्लिम समुदाय की महिला होकर कैसे उन्होंने घर की चहारदीवारी से बहार निकलकर शराबखोरी, दहेजप्रथा, पर्दाप्रथा, बालविवाह प्रथा के विरुद्ध कार्य किया है। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से महिला कमांडों की लीडर शमसाद बेगम की जीवनी, पारिवारिक पृष्ठभूमि, उनके कार्य एवं उपलब्धियों के बारे तथ्य संकलन करना है, इसके अलावा उनके कार्य के मध्य आने वाली समस्या एवं समस्या से सामंजस्य को ज्ञात करना है ? इस वैयक्तिक अध्ययन को समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान अध्ययन सामाजिक (पारिवारिक पृष्ठभूमि, रोल मॉडल), व्यक्तिगत (शिक्षा, अनुभव), पर्यावरण (सरकारी, वित्तीय संस्थान, निवेशक) और उद्यमशीलता सीख (कार्य, सामाजिक और विचित्र सीख) के विकास और सतत विकास के लिए आवश्यक कारकों की पड़ताल करता है। यह अध्ययन सैद्धांतिक और नीतिगत दृष्टिकोण से मूल्य जोड़ता है। नीतिगत दृष्टिकोण से, अध्ययन से पता चलता है कि नीति निर्माताओं को महिलाओं को सामाजिक उद्यमी बनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रचार नीतियों और विकासात्मक कार्यक्रमों पर जोर देना चाहिए। अध्ययन विषय से सम्बंधित प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार–निर्देशिका का उपयोग किया गया है।

मुख्य शब्द

महिला कमांडो (गुलाबी गैंग), शमसाद बेगम, समाज.

प्रस्तावना

भारत में विभिन्न धर्मो, संप्रदाय एवं प्रजाति के लोग निवास करते है। विभिन्न समुदाय की अपनी रूढ़ियाँ, परम्पराएं, रीति रिवाज एवं मान्यताएं है, जिसके अनुसार ये अपने समुदाय पर नियंत्रण करते है, परन्तु कुछ रूढ़ियाँ एवं परम्पराएं ऐसी है जो व्यक्ति के समुचित विकास में बाधक है। समाज में व्याप्त सामाजिक कुरुतियां इन्ही मान्यताओं की देन है जिसके चलते भारतीय समाज में सतीप्रथा, बाल विवाह, पर्दाप्रथा, देवदासी प्रथा, दहेजप्रथा, बहु पत्नी विवाह प्रथा, बहुपति विवाह प्रथा, मंदिर मस्जिद में प्रवेश की प्रथा एवं मद्यपान की प्रथा अनादिकाल से चली आ रही है। स्वतंत्रता के पूर्व कई समाज सुधारको जैसे राजाराममोहन राय, डॉ. ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फूले, डॉ. भीमराव आंबेडकर, सावित्रीबाई फूले, अहिल्याबाई होल्कर, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मदर टेरेसा, एनी बेसेन्ट एवं, सरोजनी नायडू, जैसे कई विभूतियों ने सामाजिक उत्थान के कार्य किये है, इसके बावजूद स्वतंत्रता के इतने सालों बाद भी समाज में अनेक कुरुतियां अभी भी २१वी सदी में व्याप्त है। हमारे वर्तमान सामाजिक सुधारक इन्ही सुधारको को अपना प्रेरणास्रोत्र मानकर अपने अपने राज्य, क्षेत्र, संप्रदाय सामाजिक कुरूतियों को दूर करने के कार्य कर रहे हैं। शमसाद बेगम इन्ही में से एक ऐसी विभूति है जो नशाखोरी, बाल विवाह प्रथा, दहेज़ प्रथा, बालिका एवं प्रौढ़ शिक्षा, महिला सुरक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में समाज सुधार का कार्य कर रही है। प्रस्तुत शोध आलेख में शमसाद बेगम का समाज सुधारक के रूप में भूमिका को बतलाने का प्रयास किया गया है।

पद्मश्री शमसाद बेगम के जन्मस्थल एवं बाल्यावस्था से जुड़ी बातें

पद्मश्री शमसाद बेगम का जन्म छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के गुंडरदेही विकासखंड में एक मुस्लिम मध्यम वर्गीय संयुक्त परिवार में 1 दिसंबर 1962 को हुआ था। शमसाद बेगम की माँ गृहणी एवं पिता कृषक है। शमशाद बेगम के कुल 6 बहन एवं दो भाई हैं। आप तीसरे नंबर की हैं। इनकी सभी बहने पढ़ी लिखी हैं, इनके पांचवें नंबर के बहन की मृत्यु हो चुकी है। पद्मश्री शमशाद बेगम जी ने अपनी प्रारम्भिक प्राथमिक शिक्षा पहली से लेकर पांचवी तक की शासकीय प्राथमिक शाला गुंडरदेही से प्राप्त की, माध्यमिक तक की शिक्षा शासकीय माध्यमिक शाला राजनांदगाँव से, तथा उच्चत्तर माध्यमिक तक की शिक्षा म्युनिसिपल स्कूल, राजनांदगाव से प्राप्त की हैं। शमशाद बेगम बहुप्रतिभाशाली विद्यार्थी रही है, इन्होने अपने विद्यार्थी जीवन में अनेक विधाओं जैसे इसमें खोखो, कब्बड्डी, दौड़ तथा सांस्कृतिक गतिविधियो में भाग लिया हैं, इसके लिए कई इन्हे पुरुस्कार भी मिले। पद्मश्री शमसाद बेगम ने शिक्षा अपने ननिहाल राजनांदगाव में रहकर ग्रहण की हैं। इनके नाना जी गाँव के जमींदार थे, इसके अलावा वे कृषि कार्य भी करते थे। शमसाद जी के मामा का राजनांदगाँव में रिक्शा गैरेज था। शमशाद जी के दादा की कृषि भूमि थी इसलिए इनको परिवार में आर्थिक दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ा, किन्तु इनके बड़े पापा और चाचा इनके पढ़ाई के विरुद्ध थे, इसलिए इनको पढ़ाने के लिए इनकी मम्मी को अपने गहने बचने पड़े। मुस्लिम परिवार से होने के कारण इनको और इनकी बहनो को पढाई के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि रूढ़िवादी विचारों के बीच रहकर कई चुनौतियों का सामना करते हुये इन्होने अपनी पढ़ाई जारी रखी।

पद्मश्री शमसाद बेगम जी का पारिवारिक विवरण

शमसाद बेगम जी का विवाह 22 वर्ष की आयु में सन् 1984 में हुआ। आपने अपने धर्म, जाति एवं समुदाय के बाहर के हिन्दू व्यक्ति से विवाह किया अर्थात् इन्होने अंतरधर्म, एवं अंतर्जातीय एवं अंतर समुदाय विवाह किया है। इनका विवाह संयुक्त परिवार में हुआ। इनके पति ब्राह्मण परिवार से है। शमसाद बेगम जी जब म्युनिसिपल स्कूल राजनांदगाव में नवमी की कक्षा में थी उस समय उनके पति ग्यारहवीं की कक्षा में एक ही स्कूल में पढ़ाई कर रहे थे, पढ़ाई करते–करते आप दोनों मे मित्रता बढ़ने लगी परिणामस्वरूप विचारों में समानता होने के कारण आपने और आपके पति ने परिवार मे बात रखी और थोड़ी बहुत उलझनों एवं अड़चनों के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। उन दिनों आपके पति का छोटा सा ट्यूब लाइट एवं पंखें का प्राइवेट बिज़नेस हुआ करता था। आपके दो बच्चे है, एक लड़का और एक लड़की है। आपका पुत्र आपके स्व–सहायता समूह में डाटा ऑपरेटर का कार्य करते है एवं बेटी लाइवलीहुड कॉलेज में नौकरी कर रही हैं, इसके अलावा लोक प्रशासनिक सेवा परीक्षा की तैयारी कर रही हैं।

पद्मश्री शमसाद बेगम जी का समाजसेवा के प्रति रुझान के बारे में जानकारी

आपको समाजसेवा की अभिप्रेरणा अपनी माँ एवं मदर टेरेसा से मिली। इन्होने मदर टेरेसा को आदर्श मानकर अपना समाज सेवा का कार्य प्रारम्भ किया। भारत में आजादी से पहले समाज के अंदर छुआ–छूत, सतीप्रथा, बाल–विवाह और विधवा–विवाह जैसी कुरीतियां व्याप्त थी। शमसाद बेगम जी का जीवन बेहद ही मुश्किलों भरा रहा। 1990 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अंतर्गत घर–घर में जाकर ग्रामीण समाज की महिलाओं को बिना वेतन के पढ़ाने का कार्य किया। ग्रामीण समाज की महिलाओं के उत्थान के लिए काम करने, छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाने के कारण उन्हें एक बड़े वर्ग द्वारा विरोध भी झेलना पड़ा। महिलाओं की शिक्षा एक अभिशाप मानी जाती थी उस दौरान उन्होंने 25 महिलाओं को पढ़ाकर पूरे देश में एक नई पहल की शुरुआत की।

शमसाद बेगम जी के कार्य का प्रारंभ

शमसाद बेगम जी के कार्य की शुरूआत ग्रामीण समाज के अध्यक्ष के रूप में हुआ। इसी दौरान इन्हे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में कार्य करने का अवसर मिला और यही से इनका मनोबल बढ़ा। शमसाद बेगम ने समाजसेवा की शुरुआत 1990 से की है जब साक्षरता मिशन की शुरुआत की। दुर्ग जिले के ब्लॉक डेवलपमेंट आफिसर और साक्षरता मिशन के संयोजक अधिकारी ने इन्हे अभिप्रेरक के रूप में चुना।

शमसाद बेगम जी का कार्य एवं परिवार के मध्य सामंजस्य

शमसाद बेगम जी का संयुक्त परिवार था जहां सास–ससुर, जेठ–जेठानी और उनके बच्चे साथ मे रहते थे। संयुक्त परिवार होने के कारण उनकी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ बहुत अधिक थी। घर एवं परिवार के मध्य सामंजस्य बना रहे इसके लिए अपने कार्य पर जाने के पूर्व सभी घरेलू कामों का निपटान कर लेती थी इसके अलावा शाम का कार्य घर आकर करती थी। बच्चो की देखरेख पति एवं सास ससुर करते थे। घर में अपने से बड़े सदस्यों, पति एवं रिश्तेदारों के द्वारा डांटने पर अनसुना करके एवं शांत रहकर अपने परिवार एवं कार्यस्थल के मध्य सामंजस्य बिठाती थी। इस प्रकार इन्होने समाज सुधारक के रूप में भूमिका निभाया। कार्यस्थल पर इनका इनके अधिकारीयों, कर्मचारियों, एवं सहयोगियों के साथ मधुर सम्बन्ध होने के कारण इन्हे काम करने में कोई दिक्कत नहीं आया।

समशाद बेगम जी ने जब साक्षरता मिशन मे कार्य करना प्रारंभ की उस समय इनके बच्चे काफी छोटे थे, पुत्री की आयु 2 साल और पुत्र की आयु 4 साल की थी ऐसे मे इन्हे अपने छोटे–छोटे बच्चो को 4–5 घंटे घर मे छोड़कर बिना वेतन के दूर–दूर के ग्रामो में जाकर कार्य करना पड़ता था। शमसाद बेगम को घर वापसी में रात के 10 से 11 बजे जाते थे जिसके कारण से उन्हे अपने कार्य एवं परिवार से सामंजस्य स्थापित करने मे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कभी–कभी तो इन्हे काम छोडने का मन होता किन्तु कभी–कभी ये सोचकर कि अनपढ़ पुरुष एवं महिलाएं कितना ज्यादा शोषित हो रहे है, उन्हे शोषण से बचाने कि जरूरत है सोचकर काम पर रुचि उत्पन्न करना पढ़ता था। कम के प्रति समर्पण की भावना को देखकर आपके परिवार वालों ने आपको काम करने के लिए प्रोत्साहित किया, इस प्रकार आपने ससुराल एवं मायके पक्ष दोनों के सहयोग से कार्य प्रारंभ किया।

शमसाद बेगम जी के कार्य में आने वाली कठिनाइयाँ

साक्षरता मिशन के दौरान इन्हे 163 गांव भ्रमण/घूमने का मौका मिला। साक्षरता मिशन के दौरान इन्हे महिलाओ से सम्पर्क करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पढता था। ग्रामीण समाज की महिलाये समय देने में हिचकिचाती थी। रात्रि में घर में कोई नहीं है, हम थक गए है, बाद में आना कहकर महिलाएं मना कर देती थी, क्योंकि वे घबरा जाती थी। ग्राम में पढ़े–लिखे को सरकार नौकरी नहीं देती तो हम लोग पढ़कर क्या करेंगें ऐसा कहकर वे शमसाद बेगम जी को सहयोग नहीं करती थी, परंतु जब शमसाद बेगम जी ने समझाया की पढ़ने से आपको किस बस से कहा जाना है, कौन सी बस नंबर कहा जाएगी जान जाओगे, ठेकेदार आपसे किसमे अंगूठा लगवाता है उसे जान जाओगे। इस तरह इन्होने महिलाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। गुंडरदेही ब्लॉक का 1991 में साक्षरता दर बहुत निम्न थी जो 2001 में 29 प्रतिशत साक्षरता दर बढ़कर उच्च हो गया। इन्होने 1995 में गुंडरदेही

ब्लॉक के साक्षरता मिशन के अंतर्गत कुल 18265 निरक्षर महिलाओ में से 12259 महिलाओ को साक्षर बनाने का कार्य किया। शमसाद बेगम को घर वापसी में रात के 10 से 11 बजे जाते थे, जिसके कारण वे अपने बच्चो और परिवार को पर्याप्त समय नहीं दे पाती थी। देर रात तक घर लौटने के कारण पड़ौसी इनकी निंदा करते थे तथा इनके कार्यों की आलोचना करते थे।

छत्तीसगढ़ में सामाजिक परिवर्तन के संबंध मे शमसाद बेगम जी के विचार

समाज में प्रचलित विचारधाराएं, सांस्कृतिक व सामाजिक पृष्ठभूमि में बदलाव के आधार है। सामाजिक परिवर्तन में महिलाओ की भूमिका महत्त्वपूर्ण है जिसकी मिसाल सावित्रीबाई फुले, अहिल्ल्या बाई होल्कर, रानी दुर्गावती, एवं रानी लक्ष्मीबाई हैं। छत्तीसगढ़ भी परिवर्तन के परिदृश्य से अछूता नहीं रहा है। समय के साथ प्रदेश की दिशा व दशाओं में परिवर्तन दिखाई पड़ता है। छत्तीसगढ़ राज्य 2000 में अस्तित्व में आया एवं जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 2.56 करोड़ है। सम्पूर्ण विश्व में हम लैंगिक समानता की चर्चा कर रहे हैं और महिलाओं को सम्मानपूर्वक एवं स्वतंत्रता से जीवन—यापन के लिए मार्ग ढूंढ रहे हैं, वही समाज की महिलाएं आगे आकर समाज को सुधारने का बीड़ा उठा रही हैं। छत्तीसगढ़ में भी समाज में कई कुरूतियाँ प्रचलित है जिसमें प्रमुख छत्तीसगढ़ में कई महिला समाज सुधारक जैसे केतकी बाई, फूलकुंवर बाई, पोचीबाई, रुखमिन बाई, पार्वतीबाई, रोहणी बाई, कृष्णाबाई, सीता बाई, राजकुंवरबाई ने भी स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया है, इन्ही में राधाबाई ने शराबबंदी में अहम् भूमिका निभाई हैं। केकती बाई ने राधाबाई के साथ मिलकर अश्पृश्यता उन्मूलन में अपनी भूमिका निभाई है। इस प्रकार कह सकते है की छत्तीसगढ़ की महिलाओ ने देश को आजादी दिलाने के साथ सामाजिक कुरूतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हाल के वर्षों में महिलाओं को शीर्ष प्रबंधकीय भूमिका निभाते हुए देखा गया है। व्यवसाय जगत में महिलाओं के योगदान को मान्यता दी जाती है और उन्हें निर्णय लेने वाली भूमिकाएँ प्रदान की जाती हैं। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की रिपोर्ट महिला आर्थिक सशक्तिकरण का अनुसरण (2018) के अनुसार, महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण उत्पादकता को बढ़ाता है और अन्य सकारात्मक विकास परिणामों के अलावा आर्थिक विविधीकरण और आय समानता को बढ़ाता है। महिलाओं को बढ़ते रोजगार और नेतृत्व के अवसरों से कंपनियों को काफी फायदा होता है। इसके अलावा, इसे संगठनात्मक प्रभावशीलता और विकास को बढ़ाने के लिए दिखाया गया है। यह अनुमान लगाया गया है कि वरिष्ठ प्रबंधन कार्यों में तीन या अधिक महिलाओं वाली कंपनियां संगठनात्मक प्रदर्शन के सभी आयामों में उच्च स्कोर करती हैं (महिला आर्थिक सशक्तिकरण यूएन 2018 रिपोर्ट)। गुइलेन (2014) ने तर्क दिया कि विकासशील देशों में महिला उद्यमी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे वास्तव में बदलाव ला सकती हैं।

भारत एक धर्म प्रधान देश है। देश मे स्वतंत्रता के पूर्व से सामाजिक कुरीतियाँ व्याप्त थी। मिनीमाता छत्तीसगढ़ की पहली महिला सांसद थी, इन्होने पिछड़े वर्गो के उत्थान के लिए कार्य किया। अनाथ, लाचार, पीड़ित, गरीब एवं शोषित व्यक्तियों की सेवा में इन्होने अपने जीवन को समर्पित कर दिया। बालविवाह एवं दहेजप्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई। अस्पृश्यता बिल को पारित करने में इनकी अहम भूमिका रही है। ज़ैदी मेहदी अब्बास ने २००१ में डॉक्टर एनी बेसेंट का सामाजिक चिंतन; समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर अपना शोध प्रबंध लिखा। इसमें इन्होने बताया की एनी बेसेंट मानवतावादी विचारक है। इन्होने 1874 में घर छोड़ने के पश्चात् समाजसेवा में लग गयी। इन्होने इंग्लैंड के श्रमिको के साथ हो रहे शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाया। इसके अलावा अन्धविश्वास एवं रूढ़िगत विचारों का विरोध किया। बाल विवाह एवं कन्यावध जैसी कुरीतियों का विरोध किया। अहिलया बाई होल्कर एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थीं। उस समय महिलाओं को शिक्षित करने, विधवा विवाह कराने और महिलाओ को उनका हक दिलाने जैसे बड़े समाज सुधार में अहिल्याबाई होल्कर ने कई उदाहरण प्रस्तुत किए, अहिल्या बाई होल्कर एक न्याय प्रिय शासक थीं।

शमसाद बेगम जी की उपलब्धियां

- **दीदी बैंक की संस्थापक और विचारक**: दुर्ग जिले में दीदी बैंक की स्थापना और स्वयं सहायता समूह का गठन किया। दीदी बैंक में ग्राम की महिलाओ को जोड़ने का कार्य किया और थोड़ी थोड़ी बचत की।

इनका कार्य दुर्धिया ग्राम से प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में 5000 हज़ार स्वयं सहायता समूह हैं। आज महिलाएं अपने परिवार का भरण पोषण कर रही है, आज ये करोड़ो की मालिक हैं। आज इनके कारण स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ अपने पति बच्चे और रिश्तेदार को रोजगार उपलब्ध करा रही हैं। गौठान, गोबर खाद, फूल की खेती, हल्दी, एलोवेरा, पापड़, बड़ी, आचार के बनाने के कार्य से जुडी हैं। सामाजिक उत्थान को बढ़ाने के प्रति उनके आत्म–निश्चयी रवैये के साथ, सहयोगी जन कल्याण समिति,महिला और बाल कल्याण के लिए एक संगठन, और (NABARD) जैसे विभिन्न सामाजिक कल्याण समूहों के साथ उनके जुड़ाव ने उनके सपनों को पंख दिए। स्वयं सहायता समूह के लिए कोई ड्रेस कोड नहीं है। स्वयं सहायता समूह की महिलाएं अपने इक्छा के अनुसार ड्रेस कोड निर्धारित करती हैं।

- **बिहान समूह की संस्थापक 2006:** में साक्षरता मिशन समाप्त होने के कारण इन्होने खुद का बिहान समूह बनाया। नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), सहयोगी जन कल्याण समिति, महिला और बाल कल्याण संस्था के साथ मिलकर सामाजिक उत्थान का कार्य कर रही है। मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर को नियंत्रित करने के लिए मितानिन समूह बनाया गया। गुंडरदेही ब्लॉक और डोंडी लोहरा ब्लॉक में निःशुल्क 500 मितानिन तैयार किये और 25 प्रेरक तैयार किये गए। घर में डिलवेरी कम होने लगी साथ ही स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी।
- **अन्न बैंक की संस्थापक:** अन्न बैंक की शुरुआत की ताकि कोरोना से ग्रसित बाहर से आने वाले मजदूरों के लिए निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जा सके। कोरोना वारियर द्वारा गांव में क्वारेंटीन मजदूरों का ध्यान रखा गया। ग्रामीणों को वैक्सीन लगाने के लिए अभिप्रेरित किया गया।
- **बालिका शिक्षा दान कार्य:** महिला कमांडो के द्वारा बालिका शिक्षा के लिए दान कार्य कार्य किया गया, ये ग्राम से बालिका शिक्षा के लिए घर घर जाकर कुछ दान इकट्ठा करके 6000 बालिकाओं की मदद की।
- **जन जागरूकता अभियान:** असामयिक सड़क दुर्घटना से होने वाले मृत्युदर को रोकने के लिए 1 जून 2023 से ट्रैफिक सिग्नल के पास खड़े होकर वाहन चालकों को रोककर जन जागरूकता अभियान चलाया जायेगा। इन्होने बालोद जिले में कुल 1041 स्वयं सहायता समूहों की स्थापना की। इन्होने महिलाओं की सुरक्षा के लिए महिला कमांडो का समूह बनाया इन्हे गुलाबी गैंग का नाम दिया, इस बीच इन्होने बाल विवाह, छेड़छाड़ एवं शराबबंदी के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाया और इसमें सफलता हासिल किया।

महिला कमांडो (गुलाबी गैंग) की संस्थापक और विचारक

पद्मश्री शमसाद बेगम ने छत्तीसगढ़ में अपने गृहनगर और उसके आसपास अपराध को समाप्त करने के लिए महिला कमांडो की अवधारणा पेश की। पद्मश्री शमसाद बेगम ने 2006 में छत्तीसगढ़ के बालोद जिले एवं गुंडरदेही विकासखंड में अपने सवयं सहायता समूह की महिलाओं के साथ महिला कमांडो का गठन किया था। इस महिला कमांडो के गठन का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में शराब एवं अन्य सामाजिक बुराई को दूर करना है। इस मिशन में आठ हज़ार महिलाएं कमांडो के रूप में शराब माफिया से लड़ाई लड़ रही है। 300 महिला कमांडो गुंडरदेही, गुरुर, बालोद के ग्रामों में सक्रीय है। शमसाद बेगम के अनुसार प्रतिदिन शाम को लगभग 40 महिला कमांडो का समूह लाठी, सीटी और टार्च, लेकर शराब माफियाओं के विरुद्ध गश्त पर निकलते है। रात्रि गश्त के दौरान महिला कमांडो को कई बार अनेक प्रकार की समस्यांओ का सामना करना पड़ता है। इस दौरान इन्हे गांव के सरपंच और पुलिस का भी सहारा लेने पड़ता है। महिला कमांडो प्रत्येक सामाजिक बुराई से जुड़ी समस्याओं का अवगत करा रही है। 14 जिले में 65000 महिला कमांडो निःशुल्क कार्य कर रही हैं। दूसरे ग्राम के लोग शमसाद बेगम जी से मदद लेने आते हैं। शासन की योजनाओ को ग्राम में पहुंचाने का कार्य किया। शासन की योजनाओ को ग्राम में पहुंचने के लिए पुलिस की सहायता ली ताकि बिना किसी हिंसा के अपराध को नियंत्रित किया जा सके।

महिला कमांडो (गुलाबी गैंग) के बारे मे विचार

2006 में सामाजिक कुरूतियों, कन्या भ्रूण हत्या को दूर करने के लिए गुंडरदेही और बालोद में 100 महिला

कमांडो बनाया गया। महिला कमांडो की अवधारणा महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा एवं स्वावलंबन के सिद्धान्त पर आधारित है। गुलाबी गंग से तात्पर्य महिलाओं की टोली से है जो अपना तथा अपने समुदाय की रक्षा अहिंसा के मार्ग पर चलकर करना है। महिला कमांडो का गठन एक शासकीय निकाय के संरक्षण में किया गया है जिसमे जिसमे महिलाए बिना किसी स्वार्थ के कार्य करती हैं। महिला कमांडो को पुलिस विभाग(एसपीओ) द्वारा महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण से महिलाओ में आत्मविश्वास में वृद्धि हुई और ये रात्रिकालीन समूह बनाकर गस्त में निकलती है ग्राम में होने वाले अनैतिक कार्यो को रोकती हैं। इन्हे इनके कार्यों के लिए एवं आत्मरक्षा के लिए लाठी, टार्च, टोपी एवं सीटी दिया जाता है। इनका कार्य अहिंसा पर आधारित होता है ये केवल समझाइश देने के लिए अपने उपकरण का इस्तेमाल करती है। ये चाहती है कि समूचा ग्राम नशामुक्त हो और किसी भी प्रकार के महिला के विरूद्ध अपराध न बढे, समाज में शांति व्यवस्था बानी रहे। सभी एक दूसरे का आदर सम्मान करे, परहित की भावना का पालन करें। महिला कमांडो शांतिपूर्ण कमांडो सेल है जो अहिंसा का अभ्यास करती है। विशेष कमांडो टुकड़ी देर शाम को पूरे शहर में जांच करती है और जहां भी और जब भी संभव हो अनैतिक प्रथाओं को रोकती है।

महिला कमांडो का ड्रेस कोड

महिला कमांडो कत्थे कलर की साड़ी और कत्थे कलर की टोपी पहनती है।

शमसाद बेगम को प्राप्त सम्मान

- 2006 में राज्य सरकार द्वारा मिनीमाता सम्मान से सम्मानित किया गया।
- 2006 में राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष ने सम्मानित किया।
- 2008 में महिला बाल विकास विभाग की तरफ से स्त्री शक्ति सम्मान से सम्मानित किया गया।
- 2010 में बिहान योजना के तहत ज्योतिबा बाई फूले सम्मान मिला।
- 2012 साक्षरता अभियान व नशा मुक्ति अभियान से आए बदलाव व प्रभाव को देखते हुए भारत सरकार द्वारा इन्हे में पदमश्री पुरुस्कार से सम्मानित किया गया।
- 2016 में पुणे में सूर्य दत्ता फाउंडेशन के द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाज़ा गया।
- 2017 में स्वामी महावीर सम्मान दिया गया।
- 2018 में बॉम्बे में जानकी देवी सम्मान दिया गया।
- 6 जून 2022 को सोनी टेलीविजन के द्वारा सुपर स्टार सिंगिंग सिंगर शो द्वारा सुपर वीमेन ऑफ़ द इंडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

भविष्य की योजनाएं

भविष्य में ये महिला एवं पुरुषो को बराबरी का दर्जा दिलाने का कार्य करेंगी। इन्हे सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनितिक क्षेत्र में इनको आत्मनिर्भर बनाइयेगी। ग्रामीण महिलाओं को समाजसेवा के कार्य से जोड़ेंगी तथा समाज सेवा से जुडी महिलाओ के लिए वेतन की व्यवस्था करेंगी। समाज सेवा से जुडी महिलाओं को शासकीय नौकरी देने के लिए प्रधानमत्री एवं मंत्रियों से बातचीत करेंगी। अपने कार्यों का विस्तार करेंगी।

निष्कर्ष

इस अभ्यास से शराब की अत्याधिक खपत और घरेलू हिंसा में कमी आई है। अधिकतर महिला कमांडो के पतियों ने शराब पीना छोड़ दिया। ग्रामीण इलाको में घरेलू हिंसा, मारपीट, छेड़खानी, एवं शराबखोरी तक अपराधों में पच्चीस प्रतिशत तक कमी आयी है। समाजसेवी के रूप में निरंतर सक्रिय हैं. स्कूलों में कॉपी, पेन, कंपास बांट रही हैं। उन्होंने बताया कि उनकी टीम जिले सहित राजनांदगांव, कवर्धा के स्कूली बच्चों को शिक्षा प्रोत्साहन के तहत जरूरी सामग्री का वितरण कर रही है। इस साल 2500 स्कूली बच्चों को इसका लाभ मिल चुका है। आगे 10 हजार बच्चों को लाभ देने की तैयारी है।

संदर्भ सूची

१. जैदी, मेहदी अब्बास (२००१) *डॉ. एनी बेसेंट का सामाजिक चिंतन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण,* महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, बनारस।

२. नागोटी, एल यस (१९९५) *एनी बेसेंट एवं भारत का राष्ट्रीय आंदोलन,* पॉइंटर पब्लिशर्स, जयपुर, पृ. ३०—३७।

****